

अनु वामपत्रदाव नृपर्वलालशर्मा गालमहिनदाव
कुलखलालशर्मा अष्टिदाव विशाखलालशर्मा
दत्तकुलमददाव धनखलालशर्मा ॥२८॥ गुर्वा
उषायननृप गालखलालशर्मा। सिद्धिखलालशर्मा
विद्या गालखलालशर्मा ॥ ॥ नृपया आरव
शर्मा गुर्वा कुलया आरव शर्मा गाल विशाखाया

सर्वदा सर्व सिद्धिः वनया जातव्यं सर्वं दत्तं क.
३०॥ सुकलं योजयन्त्याः पूजयिष्याम्यथा जयन्
। यमस्य योजयन्तीहः मित्रधर्मं प्रयाजयन् ॥ ॥
कन्यायां जलं यश्च शरीरं हिन्दु कलसः कायया जल
यश्च विद्यासः कश्च योजनं यश्च शरीरं श्रावदासः
मित्रया जलं यश्च धर्मसः ॥ ३१॥ नाकचमि

लां चोत्सवं यविजायते ॥ ॥ ३२॥ उग्रकवस्यः
अश्वसर्माः गुर्वनिदाया कालः शुद्धिर्न विवाः
यायानीसः जायल विवः सिधेया धयाद जा
यल विवः ॥ ३३॥ पूष्टकपुण्यो धीर्ना धीर्
गुर्वसन्निधौ नमो रुतं सतामश्च जालगई
वस्त्राय ॥ ॥ ३४॥ याकमसर्माः यधिसर्माः स

ॐ नमो भगवते वासुदेवाय ॥ ३१ ॥ जित्वा जितमना
वस्य पविर्गमिषुर्मगदी ॥ अथो नरु नलि विद्या ॥ य
श्रुवाक यानि वि॥ ॥ तिकुमिदा वा यात ॥ अला
समरुय ॥ त्वदी कुमि या वा यात ॥ अला समरुय
साधु जनव मिश या य ॥ अमु स य के ॥ ध्वरुता ॥ वृ
नषु मी माव के म हा ॥ अरुय र ॥ अत ॥ ३२ ॥

१५

नहि जलमनिशु कर्तुं ॥ जहृ तं शुभ उच्यते ॥ पुनः शुभ
मयं यानि ॥ यथा दधि दूतं यथा ॥ ॥ जलमजहृ न
जहृ यममदा ॥ जहृ दानं ॥ गुण धन र्ज्ञे ॥ गुण
दवि का या सा व ॥ गधे त्वे का त सा ॥ इ ॥ धनिस
धन यममार्थ ॥ ३२ ॥ किं कृतं वि सा य ध
गुण दानं यु डि मान न ॥ धन र्बत्स दि शु र्ध वि

[illegible]

वक्ष्यामि विद्याहीनस्तु न दास्ये ॥ १ ॥ कुम्भपत्राजय
देवपूजायामर्थपूजायायिव ॥ ४१ ॥ नावा
र्थिवरव विद्यायावगुवावनगर्हकि । उरि न
वरगगयालं नोकर्याकिपुयाजनं ॥ ॥ विद्या
जनं नामवदर्थं सुसुदयानयाययधुनालना
मचागनचित् । सुसुदयानयाययधुनकावनाम

क्रियाय ॥ ४३ ॥ गुणसर्वगुरुकः पितृवीमानिपथकः ।
वासुदेवनमस्य निःवसुदेवनमजना ॥ ॥ सिद्धवदसु-
मुखाय पूजायार्तिवत् कारकं कृष्णाय मदीः गुणध-
राननाय धर्तृसु मेकस्य नै पूजायार्तिवत्
मधुवननाय धसवर्षे वसुना नै पूजायार्ति-
क ॥ ॥ ४३ ॥ गुणवर्षे निदुस्तत्त्वे ३ विसेवसर्गस

गी। कटकी गन्धस्यार्यः स्वयं गच्छति वल्यदा ॥ ॥
गुणवर्षे वसुनाय धसवर्षे वसुनाय धसवर्षे
गन्धकटकी खानया वासनान रमसश्च मवर्षे
अर्धसाकसमर्कित निर्व ॥ ४४ ॥ विद्यात्वं वनृयन्
च न हि उत्तय न कर्म । स्वदेसपुत्रिता नाजा विद्या
सर्वगुणवर्षे ॥ ॥ राजासुव विद्या ॥ ॥ सुवर्षे

इत्यथायमक्षः राजा ज्ञानं धनं शान्तिं सुखं मानसं याचि
तु विद्यासर्वं कुरुमा. (गनवनसर्गः) राजा नै. युमा
नै. युजानै. मानसा चित्तं ॥ ४३ ॥ एको ना चित्तं कुरु
तु. विद्या शक्यं न साधुर्ना। कुलं पुरुष सिद्धन.
चन्द्रनेवयुका (४४) ॥ ॥ सुपुत्रं यादुन. विद्याव
न साधु यादुन. कुलं सपुत्रं व सिद्धयादुन गाय

१८

चन्द्रसमीपं को हि युका गाययदुपकी. सुखं काय
नै. ज्ञानं ॥ ४५ ॥ विद्यायां राजा ज्ञानं कश्चित्. कश्चित्
इवासा राजा ज्ञानं। उरुया राजा ज्ञानं कश्चित्. कश्चित्
नै. रयरा ज्ञानं ॥ सुसिद्धिर्ना सा क विद्याया र ॥ ४६ ॥
सुसिद्धिर्ना इवाया र ॥ सुसिद्धिर्ना सा क विद्या
सर्वं इवायव. सुसिद्धिर्ना सा क विद्याम सर्वं

बौद्ध बुलिच्छिनी दुर्वीन (ध्वज) ॥ ७५ ॥ नमस्किरुलिन
वृक्षा नमस्किरुलिनो जना। शुक्र का र्खेव मूर्ख
शिष्ट ननेव मन्त्र ॥ ॥ ससवसिमाने मान भो चक्र
गुणवन्तं नै मा उभा चक्र गच्छति थ इव पूर्व सा
कथं नृप यन वृष्य गन यन कम जिव रे मे ला कः
छा पुथा जने ॥ ६२ ॥ नदि कर्म निवत्ता नि सन्धाः

उद्दिगयाया ॥ ७५ ॥ वास्तु विधाम रुपा लः विदुः
म विवर्जितं। दी वृष्य व यनी ला गी सम ३४ र्व
समसु र्व ॥ ॥ सानि वामनः विदुः वचन मन्त्र
क विषय नि वल स वाणी ३४ वः स डल्य इव नः
क्री गजा वाय ॥ ७३ ॥ कुल नील गु (ध्वज) यन स ए
धर्म पना यदी। यु विनय स गद के नाजा धर्म

विधीयते ॥ ॥ कुलवक गोलवक गुणवक वे
 मिक चयन विचकन कामवक धर्मि स्वर्गः
 नाडायाय ॥ ७४ ॥ कुलवकानि नैर्दुर्ग अयुगदु
 मकारुव ४ अनायवाय कर्तन नाधियपनिध
 जयम् ॥ ॥ कुवि कामसुवनक लाति अरुनि
 आर्जव आयमसास्यवययाक धर्मि स्वर्गनाजा

२९

मुद्रा वाहनमप्यनाडित लखवाद्यगुल्लापनमु
 ध्याय विधियते ॥ ॥ समस्तगतं मनुसव धमव
 वेहावसनसव मूल बाल गुणवक धर्मि स्वर्ग
 नधाय ॥ ७२ ॥ स भविवाक तु वाङ्मा ४ वरविनिः
 यनिकक ४ विनीज धर्मि कवादीव प्रयङ्गो विधि
 यते ॥ ॥ रत्नालति ग्ग वचनपद्मन रत्नानी पल

खं च कामिनीं ॥ ॥ ख्याकं मा न खं मदा इज न या
 कं क मा खं मदा व ॥ ॥ मि सा या कं स ह खं मदा
 कामि या कं म खं मदा ॥ ६० ॥ इ व ले स व वा
 ना ज वा ना धीं वृ ति न व ले । व ले म खं मदा ॥ ३०
 न ले वी ना धीं म मृ न व ले ॥ ॥ इ व ले स वा वः
 स ह री ना ज त्व वा स क या व ले ख य म ख

स । ना ज दा न स ग न वा य ना धीं न वा न वा ॥
 ना ना व न स थ वा न । ना प दा स थ वा न । न म द स थ
 वा न । अ क व ल्या धीं वा ना व न स थ वा न । ना ज स क
 द धि श व व न स थ वा न । ध न स वि वा न या क क
 वा न्धा व वा या ॥ ६४ ॥ रा व लु धि म न्वा धीं
 ना न वी स र्ध क म् मु ॥ रा व न न्वा धि ना ना ना

लव न द्रुग न ना ॥ ॥ मान्दसाया. बुक म्. लाव मु
 द्वि कर्त्त. लाव माण ५. मु. पु. व. न. य. मा. व. व. म्. व. य.
 लाव माण ८. कर्त्त ॥ ५॥ न. द. व. वि. य. न. का. व. पाः
 पा. व. न. व. म्. म्. य. ला. व. व. वि. य. न. द. वा. न. म्. ला.
 वे. म. ह. रु. र्त्त ॥ ॥ ल्य. रु. म्. द. व. म. द. ल. सि. म. द. व. म.
 द. वा. म्. द. व. म. ह. ला. व. मा. न. न. द. व. कर्त्त. ध. न. न. ला.

[illegible]

नां अङ्गमूर्ध्नि या दलान्नकलसु न. कलकल
 वकलकल ॥ ॥ उ विरु याग दाव. शङ्कन या दा
 उ वरु. का स्यात्ताथे माल. गथेत्त अलसा. क
 लनकल. कल नख स्या यिका या. थ ॥ १० ॥
 वह उ मिय सु. थ न. या वरु. ल विव र्य य न
 । गथे व या याग का ल. वी या वट मि वा स्या नि

४९

॥ ॥ थ व विव मि वल स. म अङ्गमूर्ध्नि या. व
 स्या का य माल. थ व स य लि रु व दा स्या. व स्या का
 या सु. व. गथे व हा व स थ व र्य. गा उ ल या
 थ. गा उ रु या. थ. गा उ रु य सा रु न ॥ ११० ॥
 रु जि क क रु क सु रु. म ध्व कि न ता व स्या. म ध्व
 व व उ सि क ल्या लि. ना का यी म ध्व व र्य ॥ ॥

हुंति का सभ २ प्रा वचन स काय वन न टा वाकः
 वचन कुन स का स वा व वन का ल का व सा
 कन स स सन पुनु व शर् ॥ १११ ॥ जि का प्र व स
 गल श्री जि का प्र मि वान्ध वा जि का प्र व न्ध
 न स्या पि जि का प्र स स ली प्र व ॥ ॥ स स की व
 स न वि र्क जि का स मि य वान्ध व व स न वि र्क जि

६२

का स वन्धन स य र्व जि का स सन स ल ड यि र्व जि
 का स ॥ ११२ ॥ प्री य वा क प्र सान न स व र्क य नि ड
 क व ग सान द व का न र्व किं वा क यि ड नि ड ग ॥
 ॥ प्री य वा क का ल का व सन स प्री य र्व स नु
 व शर् धन न वा क द नि ड क य स ड व ॥ ११३ ॥
 अ न्न का ग न द स्य व ग मु या वि ध ना य का क य

मानाप्रहानिच। अउं न आगतानिच ॥ ॥ मयानज
 वरुं धयान। कं सुवुं कं याद जावुं धयान। अमु
 नमुयदागयाय याद जादुं धयान। मिसा मु
 वुं कयाउ जावुं धयान। मिसा धनवुं कयाद जा
 वरुं धयान। धवुं गावहुरनइडा कं वुं धय ॥ ११
 १॥ आगतानिच मायाकि। मविवता कनं न। ॥ १२

४३

मति ॥ ॥ अऊव। अऊयनं न। मियव मिययनं न। म
 मध सुवमध सुयन न। मिय न। अऊ न। मिय न दा
 व। धमं याकाउ नागइयव ॥ ११७ ॥ अनाय यय क
 लीव। अनाध कइयाया। अउत्य सर्व हं कीव ननः
 अयुं दिन मति ॥ ॥ मनुयन। आयम सा सीवयः
 याक कं धयान। नागा मदा। अऊ म। लाययन का

वंथकन. वायसनि. स्वमनि. वनचदार्वंथकन. ध
 म्ममन्त्रन नीनसिव ॥ ११२ ॥ ककाल काचिमाउ
 न. कावेण कावा यागमं। कसा हं कावमणकि
 विजिचिका म्मृमृ ॥ १२० ॥ सिद्धया के कृण
 गुलस्यन. वाहुरया के कृण गुलस्यन. स्वाः
 या के कृण नयगा गुलस्यन. कावया के न

४३

विमर्गं पक्ष. पक्ष. तद्वरराशिनी ॥ ॥ अविमानक
 वन. इव के थ इव. व्यापिन विउवय्म के थ इव. म्म
 अन्ना नि के थ इव. पवण्ट दसवे सन पचाद के थ इ
 व. धदा के. म्मा नी सि के थ य. इवराशि थ य ॥ १३
 ॥ या ऊ ए नि स मा या नि. मु के चा वि दिन दिन। स
 न्ध वय्ग या नि. उदि ल कु स मान व ॥ ॥ वन

अमन्त्रान् ग्यथाय स दिनयुक्तिं द्विविक्रमवाचक
वयं यकावः ॥ १३७ ॥ सचरुत्तयुक् यया न श्रीमा
यिव ॥ १३७ ॥ यनार्थयववर्मुया यनयार्थयवः
श्रीया यवस्य वगुहं वासि ॥ १३८ ॥ विगुयैरुप
ना ॥ ॥ यवअयक्तिगवयुक् यववस्तुनगीस्य
मोक्त यनयानस्य वनयु यनस्तुवनगशवर्मा

३३

यवकुसवसवपुर्द्धथइय ॥ १३९ ॥ सचरुत्तयुक् यया
यादयिव ॥ १३९ ॥ विगुयैरुप ययुक् क नशरीना
निददिनी ॥ वा ॥ ॥ यिनव ॥ १४० ॥ यस्यानैः
विपुर्ववर्मा ॥ ॥ समस्यनवुडवयुयायानैः
शवीवदरुमवर्मा ॥ १४१ ॥ वडनैडत्यमय
वुव अय ॥ १४२ ॥ वनसादयवर्मा ॥ १४३ ॥ वनसर्वय

जिह्वा जीवन्निधनिनालाकाः मृगयत्यवतन
 ॥ ॥ उद्यमवशाद्गुरुर्धर्मज्वादिनः समस्तैषु नि
 श्चयादुक्तं नृपतुषु निनाकं त्वाकं वयं नि
 धनिकुनदावः सिकं वयं ॥ ४९ ॥ अतिमहद
 मायहं कृतं यत्तु नार्ह्यं मत्पुत्रजिह्वामाहृष्ट
 सर्ववत् निवातिनं ॥ ॥ अतिमहद्विद्वत् कति

१३

अ. १. १. १.

२. ५९५